© 2018 IJSRST | Volume 4 | Issue 7 | Print ISSN: 2395-6011 | Online ISSN: 2395-602X

महाविद्यालयों में अध्यापनरत् शिक्षकों की शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन

डॉ0 गार्गी ओझा
शोधछात्रा (शिक्षाशास्त्र)
शिक्षक–शिक्षा संकाय
नेहरू ग्राम भारती मानित विश्वविद्यालय,
इलाहाबाद।

मधु वर्मा
शोधछात्रा (शिक्षाशास्त्र)
शिक्षक–शिक्षा संकाय
नेहरू ग्राम भारती मानित विश्वविद्यालय,
इलाहाबाद।

शोध आलेख सार– प्रस्तुत अध्ययन ''महाविद्यालयों में अध्यापनरत् शिक्षकों की शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन'' है। प्रस्तुत शोध अध्ययन में इलाहाबाद जनपद के वित्तीय सहायता प्राप्त एवं स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों में अध्यापनरत् शिक्षकों को जनसंख्या के रूप में सम्मिलित किया गया है। अध्ययन में वित्तीय सहायता प्राप्त एवं स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों में अध्यापनरत् 50–50 शिक्षकों का चयन किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन में डॉ0 एस0एल0 चोपड़ा द्वारा निर्मित ''शिक्षण–व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति मापन हेतु सूची'' का प्रयोग किया गया। आँकड़ों के विश्लेषण के लिए मध्यमान, मानक विचलन, मानक त्रुटि एवं टी–अनुपात सांख्यिकी विधि का प्रयोग किया गया है। निष्कर्ष में पाया कि महाविद्यालयों में अध्यापनरत् शिक्षकों की शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति में अन्तर है। .05 सार्थकता स्तर पर वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों में शिक्षकों की शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर है।

की–वर्ड – महाविद्यालय, शिक्षक, शिक्षण व्यवसाय, अभिवृत्ति

प्रस्तावना–

मानवीय जीवन की विभिन्न लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए शिक्षा एक महत्त्वपूर्ण साधन है, जीवन के लक्ष्यों में भिन्नता के अनुसार ही शिक्षा के लक्ष्यों में भिन्नता आती है। आदर्शवादी, यथार्थवादी, प्रकृतिवादी तथा प्रयोजनवादी जैसी अनेक विचारधाराओं का विकास विचारों की भिन्नता के कारण ही हुआ है। इस संसार में मानव प्राणी अपनी सुरक्षा एवं सुस्थिति के लिए संघर्ष करता है और आगे बढ़ता है। सभी प्राणियों

को जन्म लेने के बाद से ही अपनी परिस्थिति के अनुकूल कर्म करने पड़ते हैं, और इस प्रकार कार्य को करने के लिए मनुष्य को सीखना भी पड़ता है और शिक्षा भी ग्रहण करनी पड़ती है। इसके फलस्वरूप उनके अनुभवों का परिष्कार होता है। अतः शिक्षा को मानव विकास का मूल आधार माना जाता है।

आज के तकनीकी व वैज्ञानिक युग में आजीविका अथवा रोजी–रोटी की समस्या सभी वर्गों तथा स्तरों के मनुष्य के समक्ष है। इस समस्या के निराकरण हेतु मानव किसी न किसी रोजगार अथवा व्यवसाय को अपनाता है, परन्तु किसी भी व्यवसाय अथवा रोजगार में सफल होने के लिए व्यक्ति को उस व्यवसाय एवं रोजगार के विषय में सम्पूर्ण जानकारी होनी चाहिए अथवा यूँ कह सकते हैं कि उस व्यवसाय अथवा रोजगार से सम्बन्धित शिक्षा व्यक्ति को प्राप्त है तो व्यवसाय में सफलता की भावना बढ़ जाती है।

शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति दो शब्दों से मिलकर बना है – व्यवसाय एवं अभिवृत्ति।

सम्बन्धित व्यवसाय अथवा रोजगार की शिक्षा इस बात को सुनिश्चित नहीं करती है कि व्यक्ति को उस व्यवसाय अथवा रोजगार में निश्चित सफलता प्राप्त होगी। किसी भी व्यवसाय अथवा रोजगार में सुनिश्चित सफलता के लिए अथवा उस व्यवसाय को प्रारम्भ करने के पश्चात् व्यक्ति के अन्दर उस व्यवसाय से सम्बन्धित सकारात्मक दृष्टिकोण का होना आवश्यक है।

दृष्टिकोण अथवा अभिवृत्ति क्या है इसके अर्थ को स्पष्ट करना एक कठिन कार्य है। अभिवृत्ति व्यक्ति के मनोभावों अथवा विश्वासों को इंगित करती है और यह बताती है कि व्यक्ति क्या महसूस करता है अथवा व्यक्ति के पूर्व विश्वास क्या है? अभिवृत्ति से अभिप्राय व्यक्ति के उस दृष्टिकोण से है, जिसके कारण वह किन्हीं वस्तुओं, व्यक्तियों, परिस्थितियों, योजनाओं आदि के प्रति किसी विशेष प्रकार का व्यवहार करता है। दूसरे शब्दों में अभिवृत्ति व्यक्ति के व्यक्तित्व के वे प्रवृत्तियाँ हैं जो उसे किसी वस्तु, व्यक्ति अथवा कार्य के सम्बन्ध में विशिष्ट प्रकार के व्यवहार को प्रदर्शित करने का निर्णय लेने के लिए प्रेरित करती है। अभिवृत्तियों का निर्माण व्यक्ति के द्वारा भूतकाल में विभिन्न परिस्थितियों में अर्जित अनुभवों को सामान्यीकृत करने के फलस्वरूप होता है। अभिवृत्ति के निर्माण में व्यक्ति के व्यवहार के प्रत्यक्षात्मक, संवेगात्मक, प्रेरणात्मक तथा क्रियात्मक पक्ष निहित रहते हैं।

साधारण भाषा में अभिवृत्ति से तात्पर्य किसी व्यक्ति के किसी घटना, प्राणी, विचार या वस्तु के प्रति दृष्टिकोण से है। ये दृष्टिकोण ही विचारों, प्राणी, घटनाओं तथा वस्तुओं के प्रति हमारे व्यवहारों को एक निश्चित दिशा प्रदान करता है।

अभिवृत्ति व्यक्ति के व्यक्तित्व की वे प्रवृत्तियाँ हैं, जो उसे किसी वस्तु, व्यक्ति आदि के सम्बन्ध में किसी विशिष्ट प्रकार के व्यवहार को प्रदर्शित करने का निर्णय लेने को प्रेरित करते है।

थर्सटन एवं चेव के अनुसार– ''अभिवृत्ति किसी विशिष्ट प्रकरण के प्रति व्यक्ति की प्रवृत्तियों व भावनाओं, पूर्वाग्रहों अथवा पक्षपातों, पूर्व निर्मित अभिप्रायों, विचारों भय, दबावों तथा मान्यताओं का कुल योग है।''

गुड के अनुसार– ''अभिवृत्ति किसी परिस्थिति, व्यक्ति या वस्तु के प्रति किसी विशेष ढंग से, किसी विशेष सघनता से प्रतिक्रिया करने की तत्परता है।''

फ्रीमैन के शब्दों में– ''अभिवृत्ति किन्हीं परिस्थितियों, व्यक्तियों या वस्तुओं के प्रति संगत ढंग से प्रतिक्रिया करने की स्वाभाविक तत्परता है, जिसे सीख लिया गया है तथा जो व्यक्ति विशेष के द्वारा प्रतिक्रिया करने का विशिष्टि ढंग बन गया है।''

किसी देश में शिक्षारूपी तंत्र के संचालन में शिक्षक विशाल पहिया का कार्य करता है। चीन देश की प्रचलित कहावत में ठीक ही कहा है कि अगर आप किसी कार्य का सम्पादन एक वर्ष के लिए करना चाहते हैं, तो उसका बीजारोपड़ तुरन्त करिए, और अगर दस वर्ष के लिए करने की इच्छा करते हैं तो उसका वृक्षारोपण करिए और अगर सौ साल के लिए करने की इच्छा रखते हैं, तो मनुष्य का उचित ढंग से निर्माण करिए। एक सम्पूर्ण मनुष्य सुन्दर व्यक्तित्व तथा उसमें मनुष्योचित अभिवृत्ति के लिए जिसके विभिन्न आयाम हो, इनको बनाना आज बहुत ही महत्त्वपूर्ण हो गया है। शिक्षक के व्यक्तित्व का प्रभाव उसकी शिक्षण कला पर अवश्य पड़ता है और उसके व्यक्तित्व पर उसकी शिक्षण अभिवृत्ति का प्रभाव पड़ता है। **राय, बी0एन0 (1980)** ने किसी भी शिक्षण प्रक्रिया में प्रशिक्षणार्थी की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है, वह शिक्षण के लिए उपयुक्त वातावरण तभी निर्मित कर सकता है जब वह स्वयं मान्य एवं स्थापित पूर्ण अभिवृत्ति एवं मूल्यों के प्रति पूर्णतः समर्पित हो। **राव, आर0बी0 (1986)** विभिन्न सामाजिक–आर्थिक स्तर पर छात्राध्यापकों के मूल्यों, समायोजन तथा शिक्षण अभिवृत्ति के आन्तरिक सम्बन्धों का अध्ययन किया और पाया कि निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर के छात्राध्यापकों के समायोजन तथा शिक्षण अभिवृत्ति के आन्तरिक सम्बन्धों का अध्ययन किया और पाया कि निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर के छात्राध्यापकों के समायोजन तथा शिक्षण अभिवृत्ति का स्तर भी उच्च हो। **भावना (2005)** ने देवी पाटन के माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की ऊर्जा शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति को प्रभावित करने वाले कारकों एवं योग्यता व्यक्तित्व विशेषताओं के सम्बन्ध का अध्ययन में पाया कि विभिन्न शैक्षणिक योग्यता वाले शिक्षकों की ऊर्जा शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति से है। अतः शोधकर्त्ता द्वारा यह माना गया कि अध्यापक अपने छात्रों के शारीरिक तथा मानसिक विकास के लिए प्रयास करें बच्चों में किसी प्रकार की हीन भाव न भरें। छात्रों की समस्याओं का समाधान कर छात्रों की महत्त्वाकांक्षाओं, आशाओं तथा आकांक्षाओं को विकसित करने का प्रयास करना चाहिए। अध्यापक का यह परम् कर्त्तव्य है कि वह बच्चों में घुल मिलकर उन्हें अच्छे कार्यों के लिए प्रोत्साहित करें। छात्रों के प्रति स्नेह भाव रखें। पाठ्यक्रम सहगामी क्रियाओं के माध्यम से अध्यापक छात्रों के बहुसमीप जा सकता है। अतः इस प्रकार के कार्यक्रमों के माध्यम से अध्यापक छात्रों के बहुसमीप जा सकता है। अतः इस प्रकार के कार्यक्रमों के द्वारा किसी प्रकार बच्चों के हृदय में बैठाएँ, इसलिए वे अच्छे ढंग से अध्यापन कर सकें परन्तु उन्हें अध्यापन के नियम, सूत्र, तत्व तथा तकनीक मालूम नहीं रहती इसलिए जन्मजात शिक्षकों को भी प्रशिक्षण की आवश्यकता होती है।

समस्या कथन–

''महाविद्यालयों में अध्यापनरत् शिक्षकों की शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन।''

शोध अध्ययन के उद्देश्य

प्रस्तुत अध्ययन में निम्नलिखित उद्देश्यों का अध्ययन किया जायेगा–

1. महाविद्यालयों में अध्यापनरत् शिक्षकों की शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन करना।
2. वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों में महाविद्यालयों में अध्यापनरत् शिक्षकों की शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करना।

परिकल्पनाएँ–

प्रस्तुत अध्ययन में निम्नलिखित परिकल्पनाओं का परीक्षण किया गया है–

1. महाविद्यालयों में अध्यापनरत् शिक्षकों की शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति में कोई अन्तर नहीं है।
2. वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों में महाविद्यालयों में अध्यापनरत् शिक्षकों की शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति में कोई अन्तर नहीं है।

शोध विधि–

प्रस्तुत अध्ययन की प्रकृति के अनुसार, शोध में वर्णनात्मक अनुसन्धान के अन्तर्गत सर्वेक्षण विधि से पूर्ण किया गया है।

जनसंख्या एवं न्यादर्श–

प्रस्तुत शोध अध्ययन में इलाहाबाद जनपद के वित्तीय सहायता प्राप्त एवं स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों में अध्यापनरत् शिक्षकों को जनसंख्या के रूप में सम्मिलित किया गया है। अध्ययन में वित्तीय सहायता प्राप्त एवं स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों में अध्यापनरत् 50–50 शिक्षकों का चयन किया गया है।

उपकरण–

प्रस्तुत अध्ययन में डॉ0 एस0एल0 चोपड़ा द्वारा निर्मित ''शिक्षण–व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति मापन हेतु सूची'' का प्रयोग किया गया।

प्रयुक्त सांख्यिकीय प्रविधि

आँकड़ों के विश्लेषण के लिए मध्यमान, मानक विचलन, मानक त्रुटि एवं टी–अनुपात सांख्यिकी विधि का प्रयोग किया गया है।

आँकड़ों का विश्लेषण एवं व्याख्या–

उद्देश्य–1 महाविद्यालयों में अध्यापनरत् शिक्षकों की शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन करना।

H_1 महाविद्यालयों में अध्यापनरत् शिक्षकों की शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर है।

H_{01} महाविद्यालयों में अध्यापनरत् शिक्षकों की शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

सारणी सं0 1

क्र0 सं0	जेड–मान	ग्रेड	शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति	वित्तपोषित महाविद्यालयों के महाविद्यालयों में अध्यापनरत् शिक्षकों की शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति	स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों के महाविद्यालयों में अध्यापनरत् शिक्षकों की शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति
1.	+2.01 से अधिक	A	Most Favourable	5	2
2.	+1.26 से +2.00	B	Highly Favourable	31	20
3.	+0.51 से +1.25	C	Above Average Favourable	11	26
4.	−0.50 से +0.50	D	Average/Moderate Positive	4	2
5.	−0.51 से −1.25	E	Unfavourable	0	0
6.	−1.26 से −2.00	F	Highly Unfavourable	0	0
7.	−2.01 से कम	G	Most Unfavourable	0	0

प्राप्त आँकड़ों से ज्ञात होता है कि वित्तपोषित महाविद्यालयों में अध्यापनरत् शिक्षकों में शिक्षण व्यवसाय के प्रति उच्च अभिवृत्ति पायी गयी जबकि स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों में अध्ययनरत् महाविद्यालयों में अध्यापनरत् शिक्षकों में शिक्षण व्यवसाय के प्रति औसत अभिवृत्ति पायी गयी।

अतः महाविद्यालयों में अध्यापनरत् शिक्षकों की शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति में अन्तर है।

उद्देश्य–2 वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों में शिक्षकों की शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन करना।

H_2 वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों में शिक्षकों की शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर है।

H_{02} वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों में शिक्षकों की शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

तालिका संख्या–2

वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों में शिक्षकों की शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति का मध्यमान, मानक विचलन एवं टी–परीक्षण

क्र. सं.	समूह	संख्या (N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन (SD)	मध्यमानों का अन्तर (M_1~ M_2)	मानक त्रुटि (SE_D)	टी–परीक्षण (t-test)	परिणाम
1	वित्तपोषित महाविद्यालय	50	19.02	2.16	0.82	0.421	2.14	सार्थक <.05- (1.98)
2	स्ववित्तपोषित महाविद्यालय	50	18.20	2.05				

तालिका संख्या 2 से स्पष्ट है कि वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों में शिक्षकों की शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति का टी–मान 2.14 है जो कि .05 सार्थकता स्तर पर स्वायत्तता अंश ∞ के लिए दिये गये सारणी मान 1.98 से अधिक है अतः मध्यमान का अन्तर उक्त सार्थकता स्तर पर सार्थक है और शून्य परिकल्पना अस्वीकृत होती है। निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि .05 सार्थकता स्तर पर वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों में शिक्षकों की शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर है।

निष्कर्ष–

प्रस्तुत अध्ययन में निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुये –

- महाविद्यालयों में अध्यापनरत् शिक्षकों की शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति में अन्तर है।
- .05 सार्थकता स्तर पर वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों में शिक्षकों की शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर है।

संदर्भ–ग्रंथ सूची

- एन.एन. प्रहलाद एवं एस. सन्दीप (2015); ए स्टडी ऑन जॉब सेटिसफेक्शन रिलेटेड टू एटीट्यूड टूवर्ड टीचिंग ऑफ प्री–यूनिवर्सिटी टीचर्स, Research Paper Education, Indian Journal of Applied Research, Vol. 5, Issue 5, ISSN 2249-555X, pp. 19-21
- कलहोत्रा, सतीश कुमार (2014); ने ए स्टडी ऑफ टीचर इफेक्टिवनेस इन रिलेशन टू एटीट्यूड टूवर्डस टीचिंग प्रोफेशन, इन्टरनेशनल जर्नल ऑफ एजुकेशन एण्ड साइकोलॉजिकल रिसर्च, वाल्यूम–3, इश्शू–4, दिसम्बर–2014, पृ0 9–13।
- कुमार, अजय (2013); एटीट्यूड टूवर्ड टीचिंग प्रोफेशन इन रिलेशन टू एडजेस्टमेन्ट एमंग सीनियर सेकेण्ड्री स्कूली टीचर्स, इन्टरनेशनल जर्नल ऑफ साइंस एण्ड रिसर्च, ISSN (Online) : 2319-7064, pp. 830-833, www.ijsr.net।
- कौर, हरप्रीत (2013) ने शासकीय एवं अशासकीय विज्ञान शिक्षकों की अभिवृत्ति एवं उनकी वचनबद्धता का उनके व्यक्तित्व पर प्रभाव का अध्ययन, पी.एच.डी0 शोध प्रबन्ध (शिक्षाशास्त्र), पंजाब विश्वविद्यालय।
- गुप्ता, मीरा (2010); उच्च माध्यमिक स्तर पर शिक्षण में प्रभावी एवं अप्रभावी शिक्षकों की अभिवृत्ति तथा व्यक्तित्व का तुलनात्मक अध्ययन, शोध प्रबन्ध (शिक्षाशास्त्र), जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर (म0प्र0)
- शेरगिल, सबरजीत सिंह एवं लाल, रोशन (2010),ए कम्प्रेटिव स्टडी ऑफ जॉब सेटिसफेक्शन एण्ड एटीट्यूड टूवर्ड एजूकेशन एमंग मेल एण्ड फीमेल टीचर्स ऑफ डिग्री कालेज, इन्टरनेशनल जर्नल ऑफ मार्केटिंग, फाइनेन्स सर्विसेज एण्ड मैनेजमेन्ट रिसर्च, वाल्यूम–1, नं0 1, ISSN 2277-3622, pp. 57-64।
- सिंह, कुँवर जसमिन्दर पाल (2004); ने विद्यालय एवं महाविद्यालय में कार्यरत शिक्षकों की शिक्षण व्यवसाय के प्रति मूल्य एवं अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन, शोध प्रबन्ध (शिक्षाशास्त्र विभाग), पंजाब विश्वविद्यालय।
- सी. दिव्या (2014) ने एटीट्यूड ऑफ टीचर्स टूवर्डस देयर प्रोफेशन एण्ड एडमिनिस्ट्रेशन, The Criterion, An Internatinational Journal of English, Vol. 5, Issue-IV, ISSN 0976-8165, pp. 69-74, www.the-criterion.com।
- त्रिवेदी, राहिनी पी. (2012); ए स्टडी ऑफ एटीट्यूड ऑफ टीचर्स टूवर्डस टीचिंग प्रोफेशन टीचिंग एट डिफरेन्ट लेवल, इन्टरनेशनल मल्टीडिसिपलिनरी ई–जर्नस, वाल्यूम–1, इश्शू–5, मई 2012, पृ0 24–29, ISSN : 2277-4262, www.shreeprakashan.com।